संदर्भ

पर्यावरण शिक्षा : एक दृष्टि

❑ नवल किशोर सोनी

प्रारंभिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा एक जटिल और चुनौतीपूर्ण मसला है । पर्यावरण शिक्षा का विषय-क्षेत्र व्यापक और विविधतापूर्ण है जबकि बच्चों का सोच और अनुभव संसार सीमित । फिर पर्यावरण शिक्षा में सम्मिलित विषयों की प्रकृति में भिन्नता है । ऐसी स्थिति में इन विषयों की सारभूत एकता और पर्यावरण अध्ययन की आधारभूत प्रविधियों पर विचार महत्वपूर्ण हो जाता है । प्रस्तुत लेख इसी आवश्यकता पर टिप्पणी और किंचित दिशा-संकेत करता है ।

शिक्षा कैसी हो या उसके उद्देश्य क्या हों ? जब हम इस पर विचार करते हैं तो यह प्रश्न उठता है कि हम किस प्रकार का समाज वांछनीय समझते हैं और उस समाज में किस प्रकार के व्यक्ति चाहते हैं । संपूर्ण जीव-जगत की प्रवृत्ति को देखें तो जीवन जहां भी होता है, उसमें अपने आपको बनाये रखने की प्रवृत्ति पाई जाती है । या कहें कि हर जीवधारी स्वयं अपने जीवन काल को सुदीर्घ करने का प्रयत्न करता है । उसमें आत्म चेतना के प्रादुर्भाव के बाद जीवन को बनाये रखने के साथ-साथ अपने लिए संतोष जनक स्थिति के निर्माण की प्रवृत्ति भी जुड़ जाती है । मनुष्य भी सतत् रूप से इस बात के लिए प्रयत्नशील रहता है कि अपने लिए अधिकाधिक बेहतर स्थितियां बना सके । अब यदि यह बात कहें कि जीवन को बनाये रखने की प्रवृत्ति तथा बेहतर स्थिति के सृजन की प्रवृति के कारण समाज का निर्माण हुआ, संस्कृति का जन्म हुआ, सम्पूर्ण ज्ञान व कौशलों का विकास हुआ और अधिकाधिक संतुष्टि की खोज में प्रकृति को जानना और कुछ हद तक उसे नियंत्रित कर पाना आवश्यक हुआ तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

शिक्षा का व्यापक उद्देश्य व्यक्तियों में ऐसी क्षमताओं के विकास को सुनिश्चित करना होना चाहिये जिनसे वह सामाजिक, सांस्कृतिक व भौतिक जगत में स्वनिर्देशित, उत्तरदायित्वपूर्ण तथा प्रभावी ढंग से विचार व कार्य कर सके । शिक्षा का उद्देश्य यह भी है : व्यक्ति को अपने पर्यावरण के अनुसार ढालना और उसमें प्रकृति के साथ सामंजस्य बैठाने की कला का विकास करना तथा जगत के बारे में अपनी सुस्पष्ट व विवेक संगत समझ का विकास करना । यहां हमारा उद्देश्य शिक्षा और उसके उद्देश्यों की गहराई में न जाकर पर्यावरण शिक्षा पर बातचीत करना है। पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से इस तथ्य की संचेतना जाग्रत होती है कि मनुष्य पूरे प्रकृति चक्र के प्रति संवेदनशील बनने के साथ साथ प्रकृति के बारे में अपनी बुनियादी समझ का विकास करता है और प्रकृति के संदर्भ में अपनी उत्तरदायी भूमिका से परिचित होने लगता है । सामाजिक मूल्यों और प्रबल भावनाओं के विकास से वह पर्यावरण के प्रति लगाव रखना तो सीखता ही है, साथ ही उसके संरक्षण व संवर्द्धन के प्रति पहले से अधिक क्रियाशील बनता है । पर्यावरण की समस्याओं को सुलझाने का कौशल अर्जित करता है तथा पर्यावरण संबंधी कार्यक्रमों का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और पारिस्थितिक बिन्दुओं के आधार पर मूल्यांकन करने में समर्थ हो जाता है। पर्यावरण शिक्षा व्यक्ति की पर्यावरण के प्रति संचेतना बढ़ाने, उसके बारे में विवेक संगत समझ का विकास करने तथा व्यक्ति और शेष जगत के बीच अन्त: संबंधों को व्याख्यायित करने एवं मनुष्य संबंधों को व्याख्यायित करने तथा पर्यावरण के बारे में सब कुछ जानने से कुछ अधिक है। जीव-जंतु, पेड़-पौधे और इंसान कहीं न कहीं, किसी न किसी प्रकार से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं । एक दूसरे पर निर्भर हैं । और इस अंत: निर्भरता को समझना पर्यावरण शिक्षा का एक बड़ा उद्देश्य है । यह शिक्षा औपचारिक भी हो सकती है और अनौपचारिक भी।

बच्चों के संदर्भ में पर्यावरण शिक्षा की बात करें तो उनका अपना एक संसार होता है, उनका अपना पर्यावरण होता है, उसके साथ उनकी अपनी आत्मीयता और अंतरंगता होती है, जिसे समझने के लिए एक विशेष कौशल की जरूरत होती है । बच्चों की दुनिया को समझने के लिए उनके सीखने की प्रक्रिया, उनकी अभिरुचि तथा जिन स्थितियों में वे सीख रहे होते हैं उनसे गहरा सरोकार रखने की जरूरत होती है । बच्चों में उत्कट जिज्ञासा और अनन्त उत्सुकता रहती है । कभी जल उसकी जिज्ञासा को जगाता है तो कभी हवा उसे झकझोरती है । पृथ्वी के घूमने से लेकर पृथ्वी की गहराई तक के विचार उसे सोचने को मजबूर करते रहते हैं । मौसम का बदलना,

ऋतुओं का आना-जाना, चन्द्रमा की कलाओं का घटना-बढ़ना, पक्षियों का उड़ना व चहचहाना, आंधी-तूफान, बाढ़-सूखा, भूकंप इत्यादि का होना - आखिर ये सब क्या हैं ? क्यों हैं ? कैसे होते हैं ? यही जिज्ञासा बच्चों को प्रकृति से जोड़ती है । रह-रहकर बच्चे प्रकृति के हर रहस्य को जानने, समझने की कोशिश करते हैं । चूंकि उनकी अपनी दुनियां होती है, वे अपने आस-पास की स्थिति में संपूर्ण परिवेश को अपनी नजर से देखते हैं । इसके बारे में उनकी अपनी समझ होती है । हमारा कार्य बच्चों द्वारा अपने प्रयासों से अर्जित समझ को सुस्पष्ट व सुसंगत बनाना है जिससे बच्चे दुनिया को समझने की अपनी सामर्थ्य को विकसित कर सकें। परन्तु एक ढर्रे पर चल रही सरकारी-गैर सरकारी पाठ्य-पुस्तकों में बच्चों को रटाये जाते हैं विज्ञान के कुछ फार्मूले, इतिहास की घटनाओं के अंबार, नागरिक जीवन के कानून-कायदे, पूर्व निष्कर्षों व बंधे तथ्यों से युक्त प्रयोग और विज्ञान के दुरूह सूत्र । काबिलेगौर यह है कि बच्चे इन सबको प्रकृति की गोद में बैठकर नहीं अपितु भीड़-भाड़ और उमस भरे कक्षा के कमरे में बैठकर सीखने को मजबूर होते हैं, जबकि प्रकृति को समझने के लिए प्रकृति के बीच जाना जरूरी है। कहने की कोशिश यह की जा रही है कि बच्चों के मस्तिष्क में यह जो चीजें जम गई है कि पाठ्य-पुस्तकों को बिना कोई शंका किये स्वीकार करना है, निगलना है, और प्रत्येक प्रश्न का एक ही उत्तर होता है और वह सही उत्तर हमेशा पाठ्य-पुस्तकों के शब्दों के बीच कहीं छुपा रहता है, या कि प्रत्येक प्रभाव किसी एक कारण के द्वारा होता है, यह नहीं कि वह कई सारे कारणों का परिणाम होता है । इन सबका निराकरण करने की जरूरत है । पर्यावरण शिक्षा यदि बच्चे को प्रकृति के बीच जाने और उसे अपनी तरह से समझने का अवसर नहीं देती है तो वह पर्यावरण शिक्षा होगी, यह कहना मुश्किल है ।

बच्चे अपने पर्यावरण के साथ अंत:क्रिया के माध्यम से ही कुछ सीखते हैं । उसके सम्पर्क में आने से ही उनमें समझ के सही संस्कार पड़ते हैं । और यह बात केवल प्रकृति के बारे में ही नहीं अपितु समाज के बारे में भी लागू होती है । बच्चों को कक्षा में बैठाकर पेड़-पौधों, जीवों, कुम्हार या पोस्टमैन के बारे में बताया जाए तो वह इतना नहीं सीख सकेगा, जितना इन लोगों को स्वयं देखकर, उनसे बातचीत करके और उनके कार्यों का अवलोकन करके सीख सकता है। पर्यावरण शिक्षा में असीम शैक्षिक संभावनायें हैं। यदि बच्चों के संदर्भ में हम इनका यथेष्ठ उपयोग करें तो यह अपने आप में शिक्षण स्थितियों का रूप धारण कर सकती हैं ।

पर्यावरण शिक्षा के विषय–क्षेत्र अन्य पाठ्यक्रमों की तुलना में कम परिभाषित हैं फिर भी यह तय है कि पर्यावरण शिक्षा बहुविषयी होनी चाहिये जिसमें जैविक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और मानवीय स्रोतों से सामग्री प्राप्त होती हो। वास्तव में पर्यावरण शिक्षा एक ऐसा अध्ययन क्षेत्र है, जिसमें जीव जंतुओं, पेड़–पौधों तथा मनुष्य समुदायों के अपने वातावरण के साथ अंतर्संबंध बनते हैं । इनका वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करना ही पर्यावरण शिक्षा है ।

हम जानते हैं कि पर्यावरण शिक्षा के विषय-क्षेत्र अन्य पाठ्यक्रमों की तुलना में कम परिभाषित हैं फिर भी यह तय है कि पर्यावरण शिक्षा बहुविषयी होनी चाहिये जिसमें जैविक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और मानवीय स्रोतों से सामग्री प्राप्त होती हो। वास्तव में पर्यावरण शिक्षा एक ऐसा अध्ययन क्षेत्र है, जिसमें जीव- जंतुओं, पेड़-पौधों तथा मनुष्य समुदायों के अपने वातावरण के साथ अंतर्संबंध बनते हैं । इनका वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करना ही पर्यावरण शिक्षा है । पर्यावरण शिक्षा का पाठ्यक्रम प्रकृति और समाज के संगम को दर्शाता है : अर्थात् उसमें जहां भौतिक परिवेश बोलता है वहां सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश भी मौन नहीं रहता। अर्थात मानव जहां एक तरफ प्रकृति से जुड़ा हुआ है तो दूसरी ओर समाज से । दोनों का क्षेत्र व्यापक है । प्रकृति के अध्ययन में जहां वनस्पति शास्त्र, भूगोल, कृषि-वानिकी, जीव-विज्ञान, रसायन, भौतिक शास्त्र और इनसे जुड़े हुए विज्ञान तथा प्रोद्योगिकी के विषय आ जाते हैं। वहीं समाज का अंग बनने के साथ ही मानव उन सभी परिस्थितियों, अंतर-संबंधों एवं प्रतिक्रियाओं का भी अंग बन जाता है, जो अतीत से लेकर भविष्य तक अपना विस्तार रखती हैं । उसके विश्वास, आस्थायें, रहन-सहन के तरीके, सोचने के ढंग, पूर्वजों से लेकर वंशजों तक की जीवन यात्राऐं, प्रतिक्रियाएं आदि सभी व्यापक समाज से जुड़ी हुई बाते हैं और ये बातें जिन शास्त्रों की रचना करती हैं, वे हैं - इतिहास, धर्मशास्त्र, दर्शन, साहित्य, मनोविज्ञान, नीति शास्त्र, नृतत्व शास्त्र, अर्थ शास्त्र, नागरिक शास्त्र, भूगोल आदि । पर्यावरण का इन सबके साथ कहीं न कहीं, कोई न कोई रिश्ता अवश्य है। इसके आधार पर कहा जा सकता है कि पर्यावरण शिक्षा एकांगी नहीं सर्वांगी है; अलग-थलग

नहीं सबको समाये हुए है और संकीर्ण नहीं, व्यापक है । इसलिए पर्यावरण-शिक्षा के लिए बुनियादी तैयारी तो जरूरी है ही, क्रियान्वयन के चरण भी तय करना जरूरी है । प्राथमिक से लेकर उच्च माध्यमिक कक्षाओं के पाठ्यकम में जहां किसी न किसी प्रकार की निरंतरता तो रहती है, वहीं स्तर के अनुसार विषय क्षेत्र का विस्तार भी होता रहता है । बच्चे की जिज्ञासा का धरातल जितना अधिक बढ़ता

जाता है, पर्यावरण शिक्षा की सामग्री का फैलाव भी उतना ही विस्तृत होता चला जाता है। जब हम पर्यावरण शिक्षा के पाठ्यक्रम में कई विषयों का समावेश मान चुके हैं तो जाहिर है कि इसके लिए शिक्षकों को ऐसा प्रशिक्षण दिया जाए जो विभिन्न विषयों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला हो ।

पर्यावरण शिक्षा का सैद्धांतिक पक्ष अपनी जगह है पर इसका स्वरूप विशेषकर अभिवृत्ति मूलक और प्रायोगिक है । कक्षा के बाहर की प्रवृत्तियां भी पर्यावरण शिक्षा के अंग है । इसलिए पर्यावरण शिक्षा को औपचारिकता के लबादे से बाहर निकाल कर इसे प्रकृति और समाज से जोड़ने की जरूरत है। बच्चे कक्षा में रहकर आखिर कितना सीख सकते हैं ? अंततः उन्हें कक्षा से बाहर तो आना ही होगा। और जब वह बाहर आयेगा तो उसे कई अनुभव भी होंगे । वह प्रकृति का अवलोकन और चित्रांकन करेगा । स्वयं विभिन्न प्रयोग करके तथ्यों व सूचनाओं का संग्रह करेगा, फिर किन्हीं निष्कर्षों पर पहुंचकर अपना कोई स्वतंत्र मत बना पायेगा। यानी वे सब कार्य करेगा जो उसके बस्ते की किताबों से बाहर के हैं । कहने की कोशिश यह कर रहा हूं कि बच्चे प्रकृति के नजदीक जायें, उसका अवलोकन करें, उन्हें अवलोकन का अनुभव मिले और फिर ज्यों-ज्यों उनकी जिज्ञासा बढ़ती जाए, उनसे प्रश्न पूछे जाएं, प्रश्नों के उत्तर ढूंढने में उनकी मदद की जाए, मिलकर समाधान निकाले जाएं और इस तरह उनके ज्ञान और अनुभव का स्वाभाविक विकास हो । ◆